**International Journal of Social Research and Development**
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709; Print ISSN: 2664-8695; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 06-12-2020; Accepted: 21-12-2020; Published: 07-01-2021
Volume 3; Issue 1; 2021; Page No. 05-09

# पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आधुनिक भारत में विचारों के महत्व

**डॉ. प्रवेश कुमार पाण्डेय[1], रमन उपाध्याय[2]**
[1] सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री गुरूनानक महिला महाविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

**सारांश**
पंडित दीनदयाल उपाध्याय, भारत के एक प्रमुख विचारक, भारतीय संस्कृति और वैदिक ज्ञान से प्रेरित थे। आर्थिक स्थिति के बारे इसी प्रकार गाँव से श्रम प्रधान लोगों का पलायन हो इस कारण फसलों की कटाई और बुवाई के समय मजदूरों के लिए वहां जाना मुश्किल हो जाता है, जो कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। देश की संस्कृति और शिक्षा पर प्रकाश इस जगत का प्रत्येक यक्ति के समाज के महत्व को स्पष्ट किया है सामाजिक बुराइयों को दूर करने का और समाज को एक नई दिशा एंव नई संरचना देकर आगे बढाने का प्रयास किया है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्र और राज्य के संबंध में जनसंख्या को लेकर अपना विचार रखा है भारत की विदेश नीति पर कहा की आत्मनिर्भर बनना है देश में मानव जीवन जाने के एक अनुशान रहना होगा।

**मूलशब्दः** पंडित दीनदयाल उपाध्याय, सामाजिक और सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्रों में विचारों के महत्व, भारत की विदेश नीति

## प्रस्तावना
पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आधुनिक भारत में विचार पहले की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। भौतिकवाद के कारण में देश में आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक जैसी बुराइयाँ पैदा हो होने लगी हैं। यहां दूसरों को मिलाने की वजह से हमने खुद पर विचार करना बंद कर दिए है और अंधभक्ति की प्रवृत्ति के अधीन हम सब की सोच समाप्त की ओर बढ़ रही है अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप अपने तरीके से सोचना समझ कर विचार करना पड़ेगा। किसी भी प्रणाली को अपनाने से पहले अपने देश की परिस्थितियों को देखना बहुत जरूरी है। आज हम पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण करते हुए प्रगतिवादी कहलाने के लिए चक्र में अपनी मूल संरचना से दूर भागे जा रहे हैं। बिना सोचे समझे दूसरों की विचारधारा से जीवन जीने का तरीका और सभ्यता से दूसरों की संस्कृति की नकल करना शुरू करते है। पश्चिमी सभ्यता के पश्चिमीकरण के कारण हमारा विकास एक तरफा होता है। भौतिकवाद के घेरे में नैतिकता और आध्यात्मिकता को भूल जाते हैं, आध्यात्मिक संस्कृति के कारण अपना नाम भारत और गौरव लिए ऊचा करते है। इस पतन के कारण मानवता मनुष्य से दूर चली जा रही है जिससे समाज में भ्रष्टाचार, लालच, अनाचार, अत्याचार बढ़ते जा रहे है। हमारे महापुरुषों ने देश को इस तबाही से बचाने के लिए कई प्रयास किए है इसी प्रयास से पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपने व्यवहार से एक आदर्श व्यक्ति थे। भारत के समग्र विकास के लिए मार्ग को अपनाने की आवश्यकता है। जिसके साथ हम दुनिया के अग्रणी देशों में अपनी भूमिका दर्ज करा सकते हैं।

## पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक और सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्रों में विचारों के महत्व
सामाजिक एकता के क्षेत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने सामाजिक सद्भाव का विचार एक अनूठा उपहार है। मनुष्य एक सामाजिक वैज्ञानिक है और मानव समाज में रहता है और बचपन से बुढ़ापे तक मानव समाज का अंग बना रहता है। इस समाज में रहते हुए भी वह ज्ञान की तीव्रता को समझता है और विभिन्न प्रकार की जिम्मेदारियों को वहन भी करता है। प्रकृति और मनुष्य एक दूसरे का हिस्सा होते हैं। जो कि इन दो अलग–अलग अंगों को अलग मानते है, चाहे समाजवाद हो या फिर व्यक्तिवाद, दोनों ही व्यवस्थाएँ अधूरी रहती हैं। संघर्ष कभी किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं है। जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं, हमारी सोच भी व्यक्तिगत हित से परे हो जाती है और सामाजिकता हो जाती है। उस समाज के हित के बारे में बात करना आवश्यक है जिसमें हम हिस्सा हैं। अगर समाज सुरक्षित नहीं है, तो हम भी सुरक्षित नहीं हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने बहुत सारगर्भित विचार व्यक्त किए थे कि मानव का परिवार, से समाज, राष्ट्र से क्या संबंध होना चाहिए। मानवतावाद की अवधारणा उनकी अनूठी अवधारणा है। यह एक उपहार है। समाज व्यक्ति और उसके बीच पाए गए रिश्तों से बना है, ये रिश्ते आदमी के बीच एकता और संघर्ष स्थापित करते हैं, जैसा कि समाज का मानव से होगा, यह उसके साथ सद्भाव में होगा। कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जो हम बनाते हैं और कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जिन्हें हम जन्म के साथ स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण इकाई परिवार इसका एक उदाहरण है। जन्म के साथ, हम परिवार जैसी संस्था से जुड़े हैं और हमारे बीच पाया जाने वाला रक्त संबंध हमें प्रेम, त्याग और सेवा से जोड़ता है। समाज का अंतिम संस्कार करने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा समाज का अंतिम संस्कार है, इसलिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने शिक्षा प्रणाली पर विशेष ध्यान दिया, उन्होंने शिक्षा की अनिवार्यता को सभी के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। आज शिक्षा का निजीकरण ही किया जा रहा है। सैद्धांतिक नियंत्रण सरकार बन रही है। शिक्षा को व्यवसाय और उन्मुख बनाने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं और लड़कों और लड़कियों की शिक्षा पर बराबर ध्यान दिया गया है। इस शिक्षा प्रणाली जो अमीर और गरीब के लिए अलग–अलग श्रेणियों में विभाजित है, इस आर्थिक मानकों से समान स्तर पर और मानसिक क्षमता के अनुसार निकालने की जरूरत है। आज हम सभी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों से सहमत हैं कि आर्थिक अनुभव के कारण कई प्रतिभाशाली छात्र डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक बनने में असमर्थ रहे हैं। यह मानवीय

दृष्टिकोण से उचित और आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य बच्चे के शारीरिक, मानसिक और चरित्र को उसी तरह विकसित करके अगले जीवन के लिए बच्चे को तैयार करना है जिस तरह से शिक्षा द्वारा मानव का अंतिम संस्कार किया जाता है। इसमें शामिल लोग आत्म–नैतिक और आदर्श के चरित्र से होने चाहिए। उनका विचार था कि शिक्षा राज्य के नियंत्रण में होनी चाहिए लेकिन शिक्षा का सरकारीकरण नहीं होना चाहिए। यदि शिक्षा का सरकारीकरण किया जाता है, तो व्यक्तिगत जिम्मेदारी कम हो जाएगी और शिक्षा में गुणवत्ता नहीं रहेगी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार आरंभ में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए, माध्यमिक या उच्चतर स्तर पर अंग्रेजी भाषा की शिक्षा समयबद्ध होनी चाहिए। यदि क्षेत्रीय भाषाएं, हिंदी और अंग्रेजी तीन भाषाओं के समन्वय में हैं, तो इसमें क्षेत्र में देश और भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता होगी। लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए शिक्षा आवश्यक और उपयोगी है। आज हमारी सरकार और हम सभी इस स्थिति को महसूस कर रहे हैं। वह शिक्षा लड़कों और लड़कियों दोनों को समान रूप से प्रदान की जानी चाहिए। आज समाज में निजी स्कूलों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। सरकारी स्कूलों के शिक्षकों और कर्मचारियों की जिम्मेदारी के कारण निजी स्कूल संपन्न हो रहे हैं। सरकार को शिक्षा में पाठ्यक्रम, फीस आदि पर नियंत्रण बनाए रखना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य केवल क्लर्कों का उत्पादन करना नहीं होना चाहिए, बल्कि छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा में व्यावसायिक पाठ्यक्रम शामिल होना चाहिए ताकि डिग्री प्राप्त करने के बाद छात्र स्वयं कोई भी व्यवसाय चला सकें। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा से संबंधित विचारों को अपनाकर वर्तमान शिक्षा संबंधी समस्याओं का हल किया जा सके।

भारतीय संस्कृति का इतिहास बहुत प्राचीन रहा है। प्राचीनता के साथ संस्कृति में एक निरंतरता है। भारत की सभ्यता और संस्कृति प्राचीन काल से गौरवशाली रही है, क्योंकि यह हमारे पूर्वजों का आदर्श जीवन का लक्ष्य रहा हे। उन्होंने भौतिकता को कभी अपने जीवन का आदर्श नहीं माना। ज्ञान अर्जित किया और उस ज्ञान का उपयोग मानवीय मूल्यों के विकास में किया ताकि प्रकृति और मनुष्य के बीच सह–संबंध हो। एक समाज में न केवल मनुष्यों का मानवीय संबंध होता है, बल्कि सभी प्रकृति–चेतन लोगों के साथ उनके गहरे संबंध होते हैं और ये संबंध सहयोग पर आधारित होते हैं। जो जानवर हमें नुकसान पहुंचा सकते हैं, उन्हें यह सोचकर भी पूजा जाता है कि वे भी ईश्वरीय संरचना में योगदान देते रहे हैं। इसलिए यह धर्म से जुड़ा हुआ है कि लोगों में श्रद्धा होनी चाहिए और लोगों को उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए। हमारा भोजन हमारा निवास हमारी पूजा करने की विधि सभी अलग थी, लेकिन इस विधि के पीछे एक वैज्ञानिक कारण था, लेकिन हम इसे धर्म के साथ जोड़ते थे ताकि आम लोग इसे ईमानदारी से पालन करें। वैज्ञानिक मान्यता प्रदान की गई है। आज भी हमारे ऋषि–मुनियों जिन्होंने हमें प्याज, लहसुन आदि जैसे खाद्य पदार्थ खाने के लिए कहा है, उनके सेवन से कई तरह के रोग जैसे क्रोध, उत्तेजना और मधुमेह, उच्च रक्तचाप जैसी कई बीमारियाँ होती हैं। साधारण फल–भोजन जो उनके द्वारा लिया जाता था। आज डॉक्टर वही भोजन लेने की सलाह देते हैं। व्यक्ति स्वस्थ रहने के लिए या दवाई लेने से बचने के लिए भी उनका उपयोग करते है। भारत में कभी भी अन्य धर्म या संस्कृति की कोई निष्ठा या आलोचना नहीं हुई है। समन्वयकारी संस्कृति भारत की विशेषता रही है, इस संस्कृति के कारण हमने विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों को एकीकृत किया है और उन्हें हमारी संस्कृति में आत्मसात किया है। हमारी भाषा हमारी बोली अलग–अलग क्षेत्रों में अलग है, लेकिन इसमें एकता की भावना है। यह एकता भारत के लोगों में आपसी भाई चारे की भावना पैदा करती है। यह पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विचार था कि हमें सभी संस्कृतियों का सम्मान करना चाहिए, लेकिन अपनी मूल संस्कृति को नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि जो व्यक्ति या वृक्ष अपनी जड़–भूमि से अलग होता है, वह एक नए रूप में विकसित और विकसित होना चाहिए। इसलिए उच्च विचार के आदर्श को अपनाकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा सरल जीवन जिया जा सकता है, मानव जीवन को स्वस्थ और खुशहाल बनाया जा सकता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की संस्कृति का विचार दिया और कहा कि भारत एक जीवित विशाल मानव की तरह है। जिस प्रकार एक व्यक्ति को उसके साथ रहने के लिए आत्मा की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार भारत के भारतीय व्यक्ति की आत्मा, उसके लोग, पशु, पक्षी, जंगल, पहाड़, पठार, नदियाँ, समुद्र, भाषा, पूजा, रहन–सहन, व्यवसाय, आदर्श ,पोशाक, उसकी पोशाक, वनस्पति पर रहता है। उसके इस स्वभाव के साथ एकरूपता अटूट और अटल है क्योंकि शरीर इससे अलग हो जाता है और व्यवस्थित हो जाता है, उसी तरह इस सृष्टि के अलग–अलग हिस्सों को एक–दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। यही हमारी संस्कृति की विशेषता रही है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कभी मनुष्यों के बारे में, कभी समाज के बारे में कभी उचित तरीके से सोचने के लिए और एक–दूसरे को अन्योन्याश्रित रूप से देखने के लिए अपनी रुचि के बारे में सोचने के लिए कभी नहीं सोचा यह पंडित दीनदयाल उपाध्याय की इंटीग्रल एंथ्रोपोलॉजी है। इसकी शुरुआत और अंत कहां हुआ यह समझना मुश्किल है कि व्यक्ति राष्ट्र बनता है राष्ट्र की आत्मा को इससे अलग नहीं किया जा सकता है। यह हमारी संस्कृति की विशेषता है। यह ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा गया है राष्ट्र की निदा का विषय का अर्थ है कि लोग राष्ट्र बनाते हैं। यह भारतीय संस्कृति है जो इसे महसूस करते है और देखते है। पूरी सृष्टि से ईश्वर के अंश और उसके हित की कामना करना मैं देखता हूं कि वह किसी को अपने एकात्म दर्शन के कारण घृणा या उपेक्षा का पुत्र नहीं मानते है और संस्कृति क्या है उसकी क्या विशेषता है पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था कि भारतीय संस्कृति संपूर्ण जीवन की संपूर्ण रचना को मानती है, इसका दृष्टिकोण आस्तिक है। टुकड़ों में सोचना न तो उचित है और न ही व्यावहारिक पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि वर्तमान समय की आवश्यकता है। आज कुछ व्यक्तिवादी विचारधारा में विश्वास करते हैं और कुछ समाजवादी विचारधारा में विश्वास करते हैं, लेकिन दोनों अधूरे हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत किये गए सही विचार यह मानना की प्रकृति और मानव कल्याण की बात को एक दूसरे के हित में मानी जानी चाहिए। क्योंकि पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था हम व्यक्ति के विभिन्न रूपों और समाज के कई संस्थानों में स्थायी संघर्ष या हितों के टकराव को नहीं मानते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का एक विशेष स्थान रहा है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही दर्शन निहित है और यह एक शाश्वत गुण है जो प्राचीन काल से चला आ रहा है। इसलिए भारत के सोए हुए राज्य को पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा जागृत किया जा सकता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय कृषि और विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था को आर्थिक विकास का आधार बताया था आर्थिक क्षेत्र में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है, ऐसे कई उद्योग जैसे जूट, कपड़ा, चाय, सब्जी आदि कृषि पर आधारित हैं। यदि कृषि का विकास होता है, तो ये उद्योग भी चलते रहेंगे। कृषि के लिए सिंचाई, खाद, बीज, मशीनरी की आवश्यकता होती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विचार था कि व्यक्तिगत स्वामित्व की कृषि प्रणाली अधिक सफल है क्योंकि व्यक्तिगत लगाव के कारण, मजदूर अपनी भूमि पर अधिक मेहनत करता है, ताकि उसे जमीन का मालिक बनाकर अधिक उत्पादन कमाया जा सके। सिंचाई के लिए कुओं, तालाबों, चेन पंपों, रेहड़ियों, नदियों आदि का उपयोग बड़ी नहरों के बजाय करना पड़ता है। इसे उन्हीं बीजों को अपनाना होगा, जिन्हें हमारे देश में विकसित किया गया है, या वे भारतीय मौसम, जलवायु और मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने में सक्षम हो सकते हैं। कृषि में, छोटे और पारंपरिक उपकरणों को सुधारना

और अपनाना होगा, ताकि छोटे किसान उन्हें खरीद सकें और छोटे पैमाने पर कृषि में उनका उपयोग कर सकें। उन्हें चलाने के लिए, बिजली, पेट्रोल या डीजल के बजाय, मानव श्रम या पवन ऊर्जा का उपयोग करना होगा। वर्तमान समय में, कई श्रमिक संगठनों का गठन किया गया है।

जिसके कारण श्रमिकों और मालिकों के बीच सहयोग, प्रेम और कर्तव्य नहीं रह गया है। औद्योगिकीकरण कई आंदोलनों को मजबूर करेगा और बढ़ती मजदूरी और घटते उत्पादन के कारण मिलें बंद हो गईं। यहां तक कि आवश्यक वेतन मिलना भी बंद हो गया है। औद्योगीकरण के कारण शहरीकरण की समस्या उत्पन्न हुई। हमें कृषि आधारित रोजगार के विकास पर ध्यान देना होगा जो पारंपरिक लोगों की मदद से गांव या शहर में कहीं भी स्थापित किया जा सकता है। क्योंकि यह अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है। किसी भी देश के लिए आयात–निर्यात आवश्यक है। इस क्षेत्र में भारत को संतुलन बनाते हुए आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करना होगा। सभी क्षेत्रों में खुद को विकसित करना होगा। उत्पादन की जाने वाली चीजों को आवश्यकता से अधिक निर्यात करना होगा, इससे विदेशी मुद्रा प्राप्त होगी और हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए कि कच्चे माल का निर्यात करके और तैयार माल का आयात करके, ऐसा करने से विदेशी लाभ उठाएंगे और हमें कच्चे माल को विदेशियों को बेचने से ज्यादा लाभ नहीं होगा। इसलिए ऐसी नीति बनाई जानी चाहिए जिससे हमारा आर्थिक विकास हो। भूमि ईश्वर द्वारा दिया गया एक मुफ्त उपहार है जो मात्रा में सीमित है, जिसे हम बढ़ती आबादी की तरह नहीं बढ़ा सकते है। भूमि भी एक सीमा है जिसमें बढ़ती आबादी के साथ रहने के लिए आवासीय भूमि, जंगल, नदी, पहाड़, पठार आदि सभी आवश्यक हैं। मानव जीवन को समाप्त करने, पर्यावरण को प्रदूषित करने के लिए इन सभी को कम करने के लिए उपयोगी है, जिसके दूरगामी परिणाम होंगे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय औद्योगीकरण के विरोधी नहीं थे। वह अपने जीवन में भारतीय दर्शन के अनुरूप से औद्योगिकीकरण करना चाहते थे क्योंकि बड़े उद्योगों, मशीनों के आयात, उनके रख–रखाव में इस्तेमाल होने वाली विशाल पूंजी हम सभी के लिए संभव नहीं है, इससे उत्पादन बढ़ता है, लेकिन मजदूर बेरोजगार हैं इसलिए अच्छा भोजन, कपड़े भले ही घर न हों, लेकिन जीवन जीने की बुनियादी जरूरतें पूरी होनी चाहिए। आज सभी उद्योगपतियों को यह एहसास होने लगा है कि बड़े उद्योगों को स्थापित करने की हिम्मत करना आसान नहीं है और अगर किसी कारण से इसे बंद कर दिया जाता है, तो नुकसान का जोखिम आसान नहीं है। बेरोजगारी की इस समस्या के कारण कानपुर, अहमदाबाद, गाजियाबाद, लखनऊ जैसे कई शहरों की मिलें बंद हो गई हैं और करोड़ों–अरबों की मशीनों के रूप में एकत्र की गई पूंजी भी नष्ट हो रही है। यदि इसे छोटे पैमाने पर शुरू किया गया, तो हजारों करोड़ रुपये खर्च होंगे और इसे फिर से शुरू करने की हिम्मत हो सकती है। इसलिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने छोटे उद्योगों को अधिक उपयोगी माना।यदि इस जगह के कामकाजी लोग युवा रहकर व्यवसाय शुरू करते हैं, तो इस समस्या को हल किया जा सकता है और गांव और शहर दोनों समान रूप से विकसित हो सकते हैं। हस्तनिर्मित सामान और पारंपरिक व्यवसायों जैसे बुनकर, सुनार, बढ़ई, लोहार, आदि के काम का विस्तार किया जा सकता है। विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था होने से, पूरे देश का विकास होगा, बेरोजगारी, बेरोजगारी, अर्ध–बेरोजगारी और गरीबी की समस्या समाप्त हो जाएगी और समाज में फैल रही बुराइयों को रोका जा सकेगा। आर्थिक विचार राष्ट्र को लाने के लिए समय पर आर्थिक समृद्धि महत्वपूर्ण हैं। उन्हें व्यावहारिक बनाने की आवश्यकता है, अगर वर्तमान समय में इन आर्थिक विचारों के अनुसार देश चलाया जाता है, तो देश की आर्थिक प्रगति निश्चित रूप से होगी और हम आत्मनिर्भर बनेंगे।

## राष्ट्र और राज्य के संबंध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के महत्व

मानव जीवन इतना जटिल हो गया है कि उसके लिए सभी कार्य स्वयं करना संभव नहीं है। आज हम जिस भौतिकवादी युग में जी रहे हैं उससे अछूते नहीं रह सकते है लेकिन उन्हें भूलकर हम अपनी संस्कृति को भूल जाते हैं, यह भी उचित नहीं है। प्राचीन काल में छोटे जिले और शहर थे जिसमें प्रत्येक जिले का राज्याभिषेक होता था जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के मंत्री, सेनापति और अधिकारी होते थे। राजा का पद सर्वोच्च था। वे स्वयं प्रशासनिक, कार्यकारी और न्यायपालिका का काम करते थे। उस समय शहर की आबादी की कमी के कारण सभी कार्य राजा द्वारा मंत्रियों की सलाह पर किए जाते थे लेकिन आज राज्य की आबादी लाखों और करोड़ों में होने के कारण यह अब संभव नहीं है कि राजा द्वारा यह कार्य करना चाहिए और न ही शासन की कोई राजतंत्रात्मक व्यवस्था है। विविधता राज्य के रूप में आई है। प्राचीन काल में केवल जनसंख्या और भूमि को राज्य का एक आवश्यक तत्व माना जाता था, धीरे–धीरे सरकार भी इन तत्वों में शामिल हो गई। राज्य के चार आवश्यक तत्वों को जनसंख्या, क्षेत्र में सरकार और संप्रभुता मानी जाती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राज्य के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा कि राष्ट्र में एक जीवित इकाई है, जो लंबे समय तक विकसित होती रही है। एक निश्चित भूमि क्षेत्र में रहने वाला एक मानव समुदाय तब से भूमि की अखंडता की स्थापना करता आया है जब से जीवन के विशिष्ट गुण और वही परंपरा महत्वाकांक्षा पर आधारित है। जीवन के मूल्यों और महान तप की परंपरा को स्थापित करने के लिए संगठित किया जाता है, इस परंपरा को जीवंत बनाने और इसे और अधिक शानदार बनाने के लिए कड़ी मेहनत की जाती है। सांस्कृतिक जीवन अन्य मनुष्यों से प्रकट होता है। इस भावनात्मक रूप को राष्ट्रीय कहा जाता है। इसलिए एक व्यक्ति को राज्य की तुलना में अधिक प्यार करना चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राज्य के लिए सभी चार तत्वों का होना आवश्यक माना। राष्ट्रीयता के तत्व भी है लेकिन बनाने के लिए आवश्यक माना जाता है। जब तक हम राज्य के प्रति समर्पण नहीं करेंगे, तब तक बलिदान और भक्ति नहीं होगी, जो राज्य के लिए है। पिछले वर्षों में हमने देखा है कि यह राष्ट्रीय है। जब हमारा देश गुलाम हो गया था तब हमें आजादी के लिए इतना संघर्ष करना पड़ा था। आज हम स्वतंत्र हैं और एक स्वतंत्र राष्ट्र में रहते हैं। यह सब राष्ट्रवाद की भावना के कारण है कि राष्ट्र के विलुप्त होने के कारण इसके प्रतिनिधि संस्थान अनियंत्रित हो जाते हैं। राज्य एक अश्वारोही राष्ट्र है यदि इसकी सही ढंग से वकालत नहीं की जाती है, तो इसे बदला जा सकता है। राज्य के सभी अधिकारों को राष्ट्र द्वारा ही प्रदान किया जाता है, लेकिन यदि राज्य अनियंत्रित हो जाता है और राष्ट्र की सभी शक्तियों का अपहरण कर लेता है, तो तानाशाही स्थापित हो जाएगी और राष्ट्र अपंग हो जाएगा। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि राज्य का महत्व कम है, यह राज्य का काम है कि वह अपनी आवश्यकताओं के अनुसार राष्ट्र को समृद्ध, संरक्षित, और समृद्ध बनाये।

## भारत की विदेश नीति पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के महत्व

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने स्वतंत्र और राष्ट्रीय हित पर आधारित विदेश नीति का समर्थन किया। हमने किसी भी रक्षा संसाधनों पर ज्यादा पैसा खर्च नहीं किया और न ही हमारा पूरा ध्यान कभी रक्षा पर गया है संभव है कि लंबे समय तक हमें बेचैन रहना पड़ा। हमारे आपसी झगड़ों ने हमें गुलाम बना दिया। हमें अपनी कमजोरियों की वजह से गुलामी मिली, दूसरों की ताकत की वजह से नहीं मिली। भारत पाकिस्तान का विभाजन इसका वर्तमान उदाहरण है कि आज अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने की जरूरत है, ताकि देश अपने बचाव में

अधिक खर्च करके पूरी तरह से आत्मनिर्भर और शक्ति–संपन्न बन सके और हमारी विदेश नीति को राष्ट्र हित और दुनिया की शक्तियों के परिप्रेक्ष्य में निर्धारित किया जाना चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय युद्ध के समर्थक नहीं थे, लेकिन वे कायर नहीं थे कि एक ओर हमारी सीमाओं पर हमला किया जाए और हम शांतिपूर्ण होने का दावा करें, यह कायरता उनके द्वारा स्वीकार नहीं की गई थी। इसलिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने 40–45 साल पहले अपना स्पष्ट विचार दिया था कि भारत को एक परमाणु बम बनाना चाहिए और कहा कि इसे बनाने के लिए कितना पैसा लगता है हमें इसे प्राथमिकता के आधार पर पूरा करना चाहिए। लेकिन तत्कालीन सरकार ने उनके विचारों पर कोई ध्यान नहीं दिया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने हमेशा विदेश नीति के निर्माण में प्रतिरक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता का सुझाव दिया। उन्होंने किसी भी अंतर्राष्ट्रीय समूह में राष्ट्र में शामिल होना उचित नहीं समझा। उन्होंने अपने ऊपर लगे आरोपों के बारे में कभी चिंता नहीं की और जैसा उन्होंने सोचा था कि विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त किया। स्वतंत्र भारत की विदेश नीति का निर्धारण करते समय, नेहरू उस परिणामी नीति से चूक गए जो उन्होंने निर्धारित नहीं की थी। पड़ोसियों के साथ संबंध भी ठीक से निर्धारित नहीं हैं। यही कारण था कि जब चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया था और नेहरू जी चुप थे, तो उन्होंने घोषणा की कि तिब्बत चीन का हिस्सा है, इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा एशिया में शांति के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है। जो इस विषय पर सोचते हैं। भारत को एक लचीली नीति अपनानी चाहिए, वे पुरुषों के संबंधों से परेशान नहीं हैं। यह सोचने की उनकी इच्छा है कि कम्युनिस्ट समुदायों की दासता भारत को स्वीकार करती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने हमेशा स्वतंत्र और निष्पक्ष नीति के बारे में सोचा है। उन्होंने रूस और अमेरिका दोनों के गलत वर्चस्व को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि कश्मीर मुद्दे में संयुक्त राष्ट्र में रूस के अधिकार का उपयोग करके रूस को भारत की सहानुभूति मिली।

## अनुशासनात्मक विचारों के महत्व

मानव जीवन के लिए अनुशासन में रहना बहुत महत्वपूर्ण है। अनुशासन का अर्थ है नियम का पालन करना या नियमों में बंधे रहना और सभी को नियंत्रित और अनुशासित होना चाहिए। समाज को प्रगतिशील बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के संगठन हैं। राजनीतिक दल भी एक ऐसा संगठन है जो समाज को प्रगति देता है। राजनीतिक दलों के लिए अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण है। आज के राजनीतिक दलों में पार्टी का अनुशासन नहीं किया जाता है। आज लोग अपने स्वार्थ और पद की प्राप्ति के लिए एक पार्टी से दूसरी पार्टी में दल–बदल होते रहते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि एक अनुशासित राष्ट्र के निर्माण के लिए एक अनुशासित पार्टी की आवश्यकता थी। आज राजनीतिक दलों में अनुशासन नाम की कोई चीज नहीं है। चाहे वह कांग्रेस पार्टी हो या भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी या बहुजन समाज पार्टी इन सभी दलों में इस गुण का अभाव है। दूसरे दलों की झूठी आलोचना करना, सत्ता हासिल करने के लिए मजबूर करना उनका मुख्य कार्य और अभ्यास बन गया है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि नैतिकता, पहनावा, जीवन शैली, पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के भाषणों को अनुशासित किया जाना चाहिए। राजनेताओं का व्यवहार अनुशासित और आदर्श नहीं होता है, इसलिए राजनेताओं के व्यक्तित्व का समाज में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। आज समस्या यह है कि प्रत्येक पार्टी अपने कार्यकर्ताओं पर अनुशासन लागू नहीं करती है। हर राजनीतिक दल की नीतियां और सिद्धांत हैं जिनके अनुसार उन्हें आचरण करना चाहिए। नीतियों के खिलाफ काम करने वाले नेताओं को किसी भी पार्टी में बने रहने का नैतिक अधिकार नहीं है। इसलिए वे जनसंघ को ऐसी पार्टी बनाना चाहते थे जिसमें जनता न आए। उसे एक राष्ट्रवादी पार्टी बननी चाहिए, जिसके अपने सिद्धांत, अपने नियम हैं और जिसे सत्ता हासिल करने के लिए अन्य दलों से समझौता या समर्थन नहीं करना चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय सिद्धांतों के आधार पर राजनीति करते थे। जब तक वे राजनीति में रहे उन्होंने राजनीति में पवित्रता को बनाए रखी। पांडे खुद एक आदर्श और अनुशासित जीवन जीते थे और फिर पार्टी के अन्य कार्यकर्ताओं को भी ऐसा करने को कहा पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने व्यक्तिगत रूप से राजनीतिक मंच पर किसी भी राजनेता पर आचरण संबंधी आरोप नहीं लगाए। उनका मानना था कि राजनीतिक दलों में कठोर अनुशासन होना चाहिए, तभी हमारी पार्टियों का आयोजन होगा। वर्तमान समय में राजनीतिक दलों में घटते अनुशासन और चरित्र–चित्रण को रोकने के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुशासन से संबंधित विचारों को अपनाया जाएगा। अपनी नीतियों को अपनाने से वे राष्ट्रहित के लिए अनुशासनहीनता की समस्या को दूर करने में सक्षम होंगे।

## निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने जीवन दर्शन के सभी पहलुओं को भारतीय समाज के लिए उपयोगी माना है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनीतिक रूप से सोचने के साथ–साथ एक दार्शनिक की तरह सोचते हैं और व्यावहारिक तथ्य भी बताते हैं और यह भी निर्देश देते हैं कि समाज को कैसे चलाना चाहिए। उनके विचार राजनीतिक विचारकों के लिए अमूल्य हैं। जिनके भाग नर और मादा, पशु, पशु, पक्षी, जलवायु, नदियाँ, पर्वत भूमि आदि हैं। उन सभी के बीच व्यक्त की गई आध्यात्मिक भावना उन्हें एकता की भावना से जोड़ती है। उस एकात्म मानव की भावना को जगाना और भारत नीति को जागृत करना उनके विचारों का मूल था। इसमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को अपनाती है। उसे अपने विषय अनुसंधान के आधार पर विवेकपूर्ण बनाने और देश, समाज, से संबंधित करने के लिए समाज में उनके विचारों का बहुमुखी महत्व है जैसे कि राजनीति में पवित्रता और शुद्धता बनाए रखना, आर्थिक समृद्धि लाना, सामयिक जाति, पर आधारित समाज का निर्माण करना। देश में सांस्कृतिक विरासत लाने और खुशी के साथ एक शांतिपूर्ण जीवन स्थापित करने के लिए वसुधैव कुटुम्बकम और जियो और जीने दो की प्रेरणा उनके विचारों की आवश्यकता है। शोध के आधार पर यह माना जा सकता है कि अगर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन को आधुनिक भारत में समायोजित किया जाता है, तो देश के सामने चुनौतियां हैं, जैसे आतंकवाद, भ्रष्टाचार, देशद्रोह आदि से मुक्ति मिल सकती है। उद्देश्य है कि आधुनिक भारत की तात्कालिक समस्याओं को आज भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों से दूर किया जा रहा है, क्योंकि 21 वीं सदी के इस युग में भी हम समाज में नैतिकता और देशभक्ति की भावना व्यक्त नहीं कर सकते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि को अपनाकर भारत को सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रतिस्थापित किया जा सकता है। अंत में विचार है कि राष्ट्रीय एकता बनाए रखने के लिए वर्तमान समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की बहुत आवश्यकता है। समाज के सभी घटकों में राजनीतिक दलों में अनुशासन आवश्यक है। सभी राजनीतिक दलों को अपनी नीतियों को अपनाना चाहिए और अनुशासनात्मक कार्य करना चाहिए। सामाजिक एकता और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए, हमें जीवन से भरा एक कानूनी अनुशासन अपनाना होगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन बहुत आदर्शवादी था। ऐसे आदर्शवादी व्यक्ति के मार्ग पर चलकर हम भारतीय आगे बढ़ सकते हैं।

## संदर्भ सूची

1. निलम नायक, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, 20 विद्यार पृष्ठ संख्या 20–113

2. पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र जीवन की दिशा पृष्ठ सख्यां 37–38
3. स.जगदीश प्रसाद माथुर, भारत चिति आर्थिक लोकतंत्र विशेषांक 1979 भारत चिती संस्थान पृष्ठ सख्यां 56
4. पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राजनीति राष्ट्र के लिए सख्यां 93
5. निलम नायक पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राजनीति पर विचार पृष्ठ संख्या 113
6. अरविन्द, भारतीय संस्कृति अरविन्द सोसाइटी पांडिचेरी 1968
7. पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र जीवन की समस्यायें, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली
8. श्रीमति शोभाशंकर, आधुनिक भारतीय समाजवादी चिंतन, साहित्य भवन इलाबाद 1980
9. पं.दीनदयाल उपाध्याय–विचार दर्शन, एकात्म मानव दर्शन, 2014– सुरूचि प्रकाशन, प्र0 सं.–78
10. ठेंगड़ी दत्तोपन्त 1970 ''एकात्म मानववादः एक अध्ययन''भारतीय संस्कृति पुनरूत्थान समित उ0प्र0
11. पं. दीनदयाल उपाध्याय, 24 सितंबर 2014, ''दीनदयाल अन्त्योदय योजना, पृष्ठ सख्या, 1–3
12. दीन दयाल विचार दर्शन खण्ड–7 पृष्ठ सख्या 46
13. पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, प्रकाशक जागृति प्रकाशन, नोएडा– 201301 अंतरराष्ट्रीय मानक पृष्ठ सख्या 1–42
14. उपाध्याय, दीनदयाल, पॉलिटिकल डायरी, सुरूची प्रकाशन, दिल्ली, 2014.
15. पंड़ित दीनदयान उपाध्याय ,2006–''भारतीय सांस्कृतिक विरासत'' पृ.सं.,–1–11
16. जैन किशाल चन्द्र 1976 शैक्षिक संगठन प्रशासन एवं पर्यवेक्षण् राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी जयपुर ।
17. उपाध्याय,दीनदयालः 2007 अष्टम् संस्करण राष्ट्र चिन्तन, लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर लखनऊ–226004
18. उपध्याय दीनदयालः2004 नवम् संस्करण, एकात्म मानववाद, जागृति प्रकाशन ,नोयडा–201301
19. 'डॉ0 प्रवेश कुमार पाण्डेय, सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री गुरूनानक महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म0प्र0)
20. 'रमन उपाध्याय, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म0प्र0)